राजस्थान आर्किटेक्चर फेस्टिवल के समापन कार्यक्रम में

माननीय अध्यक्ष का भाषण

द इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ आर्किटेक्ट्स, राजस्थान चैप्टर द्वारा आयोजित राजस्थान आर्किटेक्चर फेस्टिवल के संयोजक आर्किटेक्ट तुषार सोगानी जी

एवं इस कार्यक्रम में उपस्थित राजस्थान की वास्तु कला और संस्कृति को अपनी प्रतिभा से देश-विदेश तक एक नयी पहचान दिलानेवाले आप सभी वास्तुकला क्षेत्र से जुड़े हितधारक, आर्किटेक्ट, डिज़ाइनर्स और कलाकार साथियो

राजस्थान आर्किटेक्चर फेस्टिवल यह आयोजन एक वार्षिक महोत्सव है जो वास्तु कला क्षेत्र से जुड़े कलाकारों- आर्चीटेक्ट्स, डिज़ाइनर्स और देश-विदेश की छोटी बड़ी ब्रांड्स के बीच आपसी जुड़ाव को मजबूत करता है। और राजस्थान की वास्तुकला और संस्कृति को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक नयी पहचान दिलाता है।

मुझे जानकारी मिली कि मई 2022 में जयपुर में आयोजित इस आर्किटेक्चर फेस्टिवल के पहले संस्करण में लगभग 26 से अधिक विभिन्न देशों के 2000 से अधिक आर्किटेक्ट्स ने भाग लिया था, जिससे वास्तुकला जगत के लिए एक गतिशील और प्रभावी मंच तैयार हुआ। ओर इस आयोजन में दुनिया भर के प्रमुख वास्तुकारों और वक्ताओं की उपस्थिति देखी गई थी।

राजस्थान हमारे देश का सबसे खूबसूरत और जीवंत राज्य है। इसकी वास्तु कला की अनूठी विशेषता पूरी दुनिया में बहुत लोकप्रिय है। राजस्थान की वास्तुकला में भव्य हवेलियाँ, आश्चर्यजनक किले और विस्तृत नक्काशीदार मंदिर राजस्थान की स्थापत्य विरासत का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

अरावली की इस भूमि पर महलों के साथ कुछ सबसे आकर्षक और शानदार किले राजस्थान की प्रसिद्ध विरासत के इतिहास को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं।

राजस्थान हमारे देश का सबसे खूबसूरत और जीवंत राज्य है। इसकी वास्तुकला की अनूठी विशेषता पूरी दुनिया में बहुत लोकप्रिय है। राजस्थान वास्तु कला काफी हद तक राजपूत वास्तु कला स्कूल पर निर्भर है, जो मुगल और हिंदू संरचनात्मक डिजाइन का मिश्रण था।

भव्य हवेलियाँ, आश्चर्यजनक किले और विस्तृत ,नक्काशीदार मंदिर राजस्थान की स्थापत्य विरासत का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। रचनात्मक निर्माणों का श्रेय राजपूतों को जाता है। अरावली की सूखी भूमि वाले महलों के साथ कुछ सबसे आकर्षक और शानदार किले राजस्थान की प्रसिद्ध विरासत के इतिहास को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं।

राजस्थान के किले, हवेलियां, स्मारक आदि आकर्षण के बड़े केंद्र हैं और न केवल देश में, बल्कि विश्वभर में प्रसिद्ध हैं। वे विश्वभर से पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। राजस्थान की पत्थर नक्काशी भी राज्य के लिए बहुत गर्व और ख्याति का विषय है।

यह न केवल भव्य भवनों और प्लानिंग, बल्कि उस डिजाइन के विचार के बारे में भी हैं जो पूरे समाज के लिए उदाहरण हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए कि यह कलात्मक कौशल विलुप्त न हो जाए, स्टोन आर्टिजन्स के लिए आजीविका और व्यवहार्य आर्थिक परिस्थितियों का निर्माण करना आवश्यक है।

राजस्थान में बरसों पहले जो मंदिर इमारतें बनी वो आज भी मौजूद है. इसका सबसे बड़ा कारण आर्किटेक्ट की मेहनत ही है। माना कि उस समय में आर्किटेक्ट नहीं हुआ करते थे लेकिन लोगों में समझदारी भरा दिमाग इतना ज्यादा होता था कि वह इमारतों को सुरक्षा की दृष्टि से मजबूत बनाते थे। राजस्थान की हवेलियों को देखने के लिए लाखों लोग आज भी आते हैं। क्योंकि वहां हुई नक्काशी और निर्माण आज भी लोगो को अपनी और आकर्षित करती है।

शहरीकरण बहुत तेजी से बढ़ रहा है और चयन के साथ स्टोन्स के उपयोग में आर्किटेक्ट्स की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। राज्य के साथ-साथ देश में भी स्मार्ट सिटीज का विकास किया जा रहा है।

आज आर्किटेक्ट और कल्चर के क्षेत्र में अधिक शोध और नवाचारों की आवश्यकता है और जयपुर आर्किटेक्चर फेस्टिवल, आर्किटेक्चर के छात्रों के लिए प्रेरणा का काम करेगा।

राजस्थान एक प्रमुख पर्यटन स्थल है और अब यह वेडिंग डेस्टिनेशन के रूप में भी विकसित हो रहा है। इसके अतिरिक्त कई अपार्टमेंट बिल्डिंग्स, पब्लिक पार्क, कमर्शियल बिल्डिंग्स आदि भी बन रहे हैं।

इस परिदृश्य को देखते हुए यह महत्वपूर्ण है कि आर्किटेक्ट्स के साथ-साथ आर्किटेक्चर के छात्रों को राजस्थान में विभिन्न प्रकार के डायमेन्शनल स्टोन्स और इसके उपयोगों के बारे में पता होना चाहिए।

राजस्थान का वास्तुशिल्प पूरे देश मे उदाहरण बना हुआ है,वास्तु शिल्प का मतलब सिर्फ निर्माण करना ही नही है। बल्कि उस निर्माण को मजबूत के साथ-साथ खूबसूरत और आकर्षक बनाना है।

राजस्थान में वास्तु कला कई अलग-अलग प्रकार की इमारतों का प्रतिनिधित्व करता है, जिन्हें व्यापक रूप से धर्मनिरपेक्ष या धार्मिक के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।

इनमें विभिन्न कस्बों, गांवों, कुओं, उद्यानों, घरों और महल शामिल हैं। ये सभी प्रकार की इमारतें सार्वजनिक और नागरिक उद्देश्यों के लिए थीं। किलों को धर्मनिरपेक्ष इमारतों में शामिल किया गया है, हालांकि उनका उपयोग रक्षा और सैन्य उद्देश्यों के लिए भी किया जाता था।

जयपुर आर्किटेक्चर फेस्टिवल आर्किटेक्ट्स, आर्किटेक्चर स्टूडेंट्स और स्टोन इंडस्ट्री एंटरप्रेन्योर्स के लिए नए विचारों को साझा करने और आर्किटेक्चर, डिजाइन, कल्चर, कंजर्वेशन, हेरिटेज और स्टोन ट्रेडिशंस पर चर्चा, चिंतन और अन्वेषण के माध्यम से चर्चा करने के लिए एक अनूठा मंच है।

राजस्थान सांस्कृतिक रूप से समृद्ध है और यहां कलात्मक और सांस्कृतिक परंपराएं हैं जो प्राचीन भारतीय जीवन शैली को दर्शाती हैं। प्रत्येक क्षेत्र की संगीत और नृत्य की अपनी बोली होती है। उदयपुर का घूमर नृत्य और जैसलमेर का कालबेलिया नृत्य अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान रखते हैं। लोक संगीत राजस्थान की संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

राजपूतों की पौराणिक लड़ाइयों को बताने के लिए गीतों का उपयोग किया जाता है। लोक गीत आम तौर पर गाथा गीत होते हैं, जो वीरतापूर्ण कार्यों, प्रेम कहानियों और धार्मिक या भक्ति गीतों से संबंधित होते हैं जिन्हें भजन और बानियों के रूप में जाना जाता है और अक्सर संगीत के साथ होते हैं। आप राजस्थान के भव्य मंदिरों, ब्रह्मा मंदिर, पुष्कर, एकलिंगजी मंदिर, उदयपुर, गोविंद देवजी मंदिर, जयपुर, श्रीनाथजी मंदिर, नाथद्वारा, दिलवाड़ा मंदिर, माउंट आबू, पार्श्वनाथ मंदिर, नाकोडा, श्री

महावीरजी मंदिर, ऋषभदो मंदिर, धुलेव को देखेंगे तो आप पाएंगे कि वास्तव में राजस्थान का आर्किटेक्ट और यहाँ का कल्चर कितना समृद्ध हैं।

जयपुर आर्किटेक्चर फेस्टिवल' का उद्देश्य आर्किटेक्चर के रचनात्मक क्षेत्र में नए विचारों के आदान-प्रदान, संवाद और नेटवर्किंग के लिये एक उपयुक्त मंच प्रदान करना है।

मुझे विश्वास है जयपुर आर्किटेक्चर फेस्टिवल में भविष्य के शहरों, पर्यावरण, आर्किटेक्चर के साथ-साथ समृद्ध स्टोन ट्रेडिशंस के अभ्यास और शिक्षा के बारे में कई तरह के विचारों पर ज़ोर दिया जाएगा।

आज राजस्थान की प्राचीन वास्तु कला खत्म हो रही है, जो पहले के कारीगर थे, उनके बच्चे अब दूसरे कामों पर ध्यान दे रहे है. अपनी वास्तु कला के हुनर को छोड़ रहे है जो कि गलत है, उनको इस कला को ज़िंदा रखना है,और ये तब ही हो सकता है जब उन बच्चो का पलायन रोका जाए, उनको आर्थिक रूप से मजबूत किया जाए।

मैं संरचनात्मक इंजीनियरों का आंख मूंदकर पालन करने के बजाय पारंपरिक कारीगरों और मिस्त्रियों के ज्ञान का उपयोग करने पर जोर देना चाहूँगा।

आर्किटेक्चर के छात्रों से भी मेरा अनुरोध है कि केवल क्लाइंट के बताए विवरण का अनुसरण करने के बजाय, एक आर्किटेक्ट को 4 आई – इन्टेलेक्ट, इन्सटिक्ट, इन्टेलिजेंस और 'इन्टियूशन' का भी उपयोग करना चाहिए।

मुझे आशा है कि यह फेस्टिवल राजस्थान और भारत में वास्तु अभ्यास की चल रही चर्चाओं को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा, जो संवाद को एकजुट करने के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य करेगा।

यहाँ इस कार्यक्रम में उपस्थित आप सभी को मेरी अनंत शुभकामनाएं, और समस्त आयोजकों को इस आयोजन के लिए बहुत-बहुत साधुवाद।

***